लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 3, संख्या: 4; जनवरी-जून, 2022

पापा

✍ रोज़ी मोदक

न झुकते हैं कभी,

न झुकने देते हैं।

न रोते हैं कभी,

न रोने देते हैं।

स्वाभिमानी हैं खुद

स्वाभिमान हमें भी सिखाते हैं।

कठिनाई से हार कर जो कभी नहीं बैठते हैं,

खुद के सपनों को छोड़, मंजिल हमें दिखाते हैं।।

हौंसलें जिनके हैं बुलंद, साबित उन्होंने किया है,

वही हैं जिन्हें हम पापा कहते हैं।।

संपर्क-सूत्र
द्वितीय छमाही
गौहाटी विश्वविद्यालय